विजय. सिंह पथिक

कृत

ऐतिहासिक सामग्री

निबन्ध

प्राचीन धार्मिक समूह

यहीं कुछ ऐसे समूहों के भी उदाहरण दे देने अनुचित न होंगे, जिन में प्रारम्भ से ही किसी न किसी प्रकार के धार्मिक विचार प्रविष्ट हो गये थे। क्योंकि सभी मानव विकास के इतिहास के मर्मज्ञ इस बात को मानते हैं कि इन दोनों प्रकार के समूहों का विकास भिन्न२ शैली पर हुआ है। उनका कहना है कि -" मज़हब का आधार ज्ञान नहीं अन्ध विश्वास है। मज़हब हमें धर्मग्रन्थों, ईश्वर के कहे हुए वाक्यों और धर्माचार्यों के आदेशों को सदैव-त्रिकाल पालनीय बताता है, फिर चाहे हमारी तात्कालिक परिस्थिति और बुद्धि कुछ भी कहती हो। यही कारण है कि जब कभी समाज में किसी परिवर्तन की ज़रूरत होती है तभी सनातन या पुरातन धर्मादेशों के नाम पर समूह का एक सुधारवादी दल से अलग हो जाता है और इस प्रकार मानव जाति में फूट या वर्गों की उत्पत्ति का कारण बनता है। इतना ही नहीं, संसार भर की जातियों के इतिहास पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि संसार में हुए १०० में ८० युद्धों और हत्याकाण्डों के लिये ये ही समूह जिम्मेदार हैं जिसमें मज़हब का विष फैल गया था और यह तो मानी हुई बात है कि जिस समूह में राज्य का और युद्धों की वृद्धि हुई है उसमें स्त्री समाज अधिकाधिक कि साधन बनाया गया है।

अनैतिकता का भी मज़हब वाले समूहों में ही से अधिक प्रचार मिलता है और राज्यवाद भी सबसे जल्दी और पहले ऐसे ही समूहों में पैदा हुआ है।

"तात्पर्य यह कि जहां अन्ध विश्वास है वहां ज्ञान का पदार्पण नहीं हो सकता। अतः मज़हब ज्ञान का विरोधी है। वास्तव में मज़हब का प्रभाव घटने ही से योरोप को राज्यसत्ता, पोपसत्ता और असभ्य-बर्बरता से आंशिक मुक्ति मिली है।"

(नीति विज्ञान के आधार पर)

नाम ह्लोग अंग के जिस अंचल में उत्पन्न हुए उसका नाम पीछे उन्होंने "कृष्णगर्भा" रक्खा था। (१, १०१, १) यह नाम शायद इसलिये रक्खा गया था कि वहां अन्धकार अधिक रहता था। छः मास की रात होती थी।

इसमें संदेह नहीं कि प्रारम्भ में अन्य प्राचीन समूहों की तरह आर्य भी निरामिष भोजी थे। वे मुख्यतः सोम पर गुजर करते थे। पहले पहल उन्हें शास्त्रास्त्र आदि बनाने की आवश्यकता भी आत्म रक्षार्थ ही पड़ी होगी। किन्तु पीछे जब "जैन" धर्मग्रन्थों के अनुसार वन फलों का अभाव हो चला, तब कदाचित अन्य वन पशुओं की देखादेखी मांसाहार की प्रवृत्ति पैदा हुई। इसी लिये पशुओं को पकड़ने और रखने का आविष्कार हुआ।

और यह तो मानी हुई बात है कि कवितायें या गीत आदि बनाना मनुष्य को काफी उन्नत होने के बाद आता है। अतः यह भी सर्वथा स्वाभाविक ही है कि वेदों में हमें उसी काल तक की घटनाओं तक का वर्णन और आभास मिलता है जो उनके रचना करने योग्य उन्नत हो जाने के समय की या उससे बाद की है। क्योंकि ऊपर जो "कृष्णगर्भा" नाम को प्रमाणित करने वाला मंत्र हमने दिया है वह भी काफी पीछे का है। कारण, जिस "ऋजिश्वा" नामक समूह के मुखिया का इसमें उल्लेख है, उसी ने फिर 'कुकुन्स' में अनार्यों से युद्ध किया था इसका अर्थ यह हुआ कि उक्त मंत्र आर्यों के ध्रुव छोड़ने के थोड़े ही वर्ष पूर्व का है।

इस सम्बंध में "आर्यों के आदिम निवास" के लेखक की उक्ति भी विचारणीय है। उनका कहना है कि "आदिम ऋषियों में से तो एक दो (अंगीरा आदि) को छोड़कर शेष के नाम भी प्राप्य नहीं हैं, उनके मंत्रों का भी पता नहीं है। कारण यही है कि ध्रुव विनाश के समय उनका — और उन्हें जानने वालों में से अधिकतर का नाश हो गया।" फिर जो बचे वे भी कई भागों में बंट कर कई दिशाओं में अलग अलग गए थे।" (पृ. ४५) अतः भारत की ओर आने वाले आर्य समूह के पास इनी इतिहास सामग्री या तत्सम्बन्धी मंत्र न थे। खैर, अब हम आगे उपलब्ध सामग्री के आधार पर ही रहन-सहन के पर विचार करते हैं।

उनके लीये इतनाही काफी होता है कि वे दोनो उनके अपने देश के हैं। वे कभी यह कल्पना भी करने का कष्ट नहीं उठाते कि प्रजातंत्र और स्वेच्छा चारी राजतंत्र दोनों परस्पर विरोधी चीजे हैं। इनमें से यदि हम किसी एक को अच्छी मानते हैं तो फिर दूसरी उसे नष्ट करने वाली की हम प्रशंसा नहीं कर सकते। यदि करेंगे तो अल्प बुद्धि पाठक उससे भ्रम के शिकार हुए विना नहीं रह सकते। कम से कम राजनैतिक शिक्षा की दृष्टि से ऐसा इतिहास - ग्रन्थ सर्वथा निकम्मा होगा। अस्तु

अन...

पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि जिस "अनय" शब्द का उल्लेख ऊपर हुआ है, उस का उल्लेख ऋग्वेद में भी है। उसी के अर्थ का द्योतक शब्द "आन" आज भी लिथुआन भाषा आदि में भी प्रचलित है। इस का अर्थ है "अटल नियम।" (निरुक्त ६.२१ और ऋग्वेद ८.१०४.२)

इस से पाठक समझ जायेंगे कि 'यम' का वास्तविक अर्थ क्या था? इसी से यम के १००० वर्ष तक जीवित रहने की समाज की व्यवस्था होने की पहेली भी हल हो जाती है। वास्तव में हमारे साहित्य के भिन्न २ शब्दों और कथानकों के पीछे न मालूम ऐसे कितने ऐतिहासिक और उपयोगी रहस्य छिपे पड़े हैं। यदि वे आज सब के सब निकल आ सकें तो "भारतीय" जनता और संसार का उन के द्वारा अनन्त उपकार हो। परन्तु वे निकल सकते हैं तभी, जब कि हम कूप मण्डूकत्व छोड़, उन्नत देशों के प्राचीन साहित्य के साथ अपने साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करें, जिन २ से किसी भी समय में आर्य समूहों का सम्बन्ध रहा है। इति.

स्वतन्त्र एवं विकासशील ...
शैली और शोधप्रणाली की ओर आकर्षित हो गई, ...
इसके अध्ययन और विकास के बाद सर्वोत्तम और ...
है।

परीक्षण विधि

यहाँ उस परीक्षण विधि पर भी थोड़ा प्रकाश डालते हैं ... -श्यक है, जिस का हम ने अपने ऐतिहासिक निष्कर्षों पर ... में अनुसरण किया है। यह तो सर्वमान्य बात है कि संसार ... सजीव और निर्जीव कही जाने वाली सृष्टि का विकास प्र... बंधे हुए क्रम से हुआ है। आज भी यही देखा जाता है। अ... जातियां, जो सभ्यता के प्रभाव और क्षेत्र से दूर प्रकृति की ... में सुरक्षित आई हैं - दुर्गम - जैसे चीन और तिब्बत तथा अफ्रीका के ... ऐसे भूखंडों में जहां किसी का शासन नहीं है - उन का क्रम और संगठन बिल्कुल उसी ढांचे ... मिलता है कि जो ओल्ड टेस्टामेंट के युग के समुदायों ... उन से भी ... ऐसे समुदायों का था। साथ ही यह भी ~~सिद्ध हो गया~~ स्प... कि हमारे इतिहास में इस विकास क्रम की सर्वथा उपेक्षा ... गई है। हमारा इतिहास इस के विपरीत यह बताता है कि अनादि काल से ही एक सभ्यता बनी बनाई इस पृथ्वी ... अवतीर्ण हुई थी, जिस में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्ण, गुरु, शासक, शासित और गुलाम ईश्वर द्वारा पैदा किये बनाए गए थे। उसी को मानना हमारा धर्म है और वही हमारा इतिहास है। ~~[illegible]~~ यदि हमारे समाज और हमारी सभ्यता के क्रमागत विकास क्रम के कुछ प्रमाण मिलते भी हैं, तो वे इतने विशृंखल, इतने भ्रमाच्छादित और इतने अवैज्ञानिक रूप में मिलते हैं कि उन पर आसानी से किसी की दृष्टि जा नहीं सकती। कोई उन्हें सरलता से ठीक २ समझ ही नहीं सकता। अतः ऐसे क्रम को आसानी से पाठक समझ सकें, इस दृष्टि से, हम ने आरम्भ में दूसरे देशों और समुदायों के प्राकृतिक वि... क्रम के ऐतिहासिक वर्णन दे दिये हैं, पीछे अपना ऐतिहासिक वि... दिया है। ×

(२) इस के बाद हम ने प्राचीन साहित्य मुख्यतः वेदों के आ... पर अपने वैज्ञानिक विकास क्रम और इतिहास की खोज की है ... कहना व्यर्थ है कि हम उन्हें ईश्वर कृत ग्रन्थ मान कर ...

इसी प्रकार शुनः शेप को नरमेध के लिये द्रुपद ने बांधा था और
शेप के सूक्त ऋग्वेद में विद्यमान हैं। इस प्रकार वेदों के संग्रह
महाभारत के और भी निकट आ जाता है। ऐतरेय ब्राह्मण के
सार शुनः शेप को राजा हरिश्चन्द्र ने अपने पुत्र के बदले वाले
के लिये बांधा था। लो०)

* से पहले इस विषय में हमने जैन ~~आर्य~~ धर्म के ग्रन्थों में दिया हुआ समाज के प्रारम्भिक विकास का विवरण देना इसलिये उचित समझा है कि जैन समाज आर्यों का ही एक अभिन्न अंग है। ध्रुव में ही, जैसा कि हम आगे बतावेंगे, यह समूह अस्तित्व में आगया था। आज भी वह भारतीय हिन्दू समाज का एक ~~अभिन~~ अभिन्न अंग है। अतः वस्तुतः उसका इतिहास आर्यों का ही इतिहास है। इस लिये भी कि उसमें आर्य समूह के विकास के उन अध्यायों का भी वर्णन मिलता है, जिन पर वेदों में कोई मंत्र और सूक्त नहीं मिलते अथवा जिन अध्यायों के काल में मनुष्य मंत्र और सूक्त रचना सीखे ही न थे। अवश्य ही यह सब बहुत ही संक्षिप्त रूप में दिया जा रहा है।

४ मद्यांग कल्प वृक्ष से उन्हें मद्य प्राप्त होती थी। पीछे जब कल्प वृक्षों ने वाञ्छित वस्तुएँ देना कम और फिर बन्द करदिया, तब दूसरे उपायों की खोज शुरू हुई। इसके अतिरिक्त उस समय

ओल्ड टेस्टामेंट भी संसार के प्राचीन धर्म ग्रन्थों में से एक है। वह आर्यों और पारसियों के साहित्य को छोड़कर शेष सबसे पुराना है। साथही उसमें मानव समूह के प्राकृतिक विकास का वर्णन सबसे अधिक स्पष्ट रूप में दिया गया है, न उसमें जैनों की तरह इस विषय को धार्मिक आवरण या विचित्रता में लपेटा गया है न आर्य समूह की तरह उसे बिल्कुल उड़ाया गया है। अतः यहां उससे भी बातें दी जाती हैं।

इस ग्रन्थ के अनुसार

x ये पहले इस विषय में हम ने जैन धर्म के ग्रन्थों में दिया हुआ मनुष्य के प्रारम्भिक विकास का विवरण देना इसलिये उचित समझा है कि जैन समाज आर्यों का ही एक अभिन्न अंग है। शुरू में ही, जैसा कि हम आगे बतायेंगे, यह समूह आस्तित्व में आ गया था। आज भी वह भारतीय हिंदू समाज का एक अभिन्न अंग है। अतः वस्तुतः उस का इतिहास आर्यों का ही इतिहास है। इसलिये भी कि उस में आर्य समूह के विकास ~~के~~ उन ~~[illegible]~~ अध्यायों का भी वर्णन मिलता है, जिन पर वेदों में कोई मंत्र और सूक्त नहीं मिलते अथवा जिन अध्यायों के काल में मनुष्य मंत्र और सूक्त रचना सीखे ही न थे। अवश्य ही यह सब बहुत ही संक्षिप्त रूप में दिया जा रहा है।

ψ मद्यांग कल्प वृक्ष से उन्हें मद्य प्राप्त होती थी। पीछे जब कल्प-वृक्षों ने वाञ्छित वस्तुएँ देना कम और फिर बन्द कर दिया, तब दूसरे उपायों की खोज शुरू हुई। इस के अतिरिक्त उस समय

& 'ओल्ड टेस्टामेंट' भी संसार के प्राचीन धर्मग्रन्थों में से एक है। वह आर्यों और पारसियों के साहित्य को छोड़ कर शेष सब से पुराना है। साथ ही उस में मानव समूह के प्राकृतिक विकास का वर्णन सब से अधिक स्पष्ट रूप में दिया गया है, न उस में जैनों की तरह इस विषय को धार्मिक आवरण या विचित्रता में लपेटा गया है न आर्य समूह की तरह उसे बिल्कुल उड़ाया गया है। अतः यहां उस से भी कुछ बातें दी जाती हैं; इस ग्रन्थ के अनुसार . . .

कि वेदों का संग्रह करते समय लोग प्राचीन [illegible]
अर्थों को भूल चले थे। इस (लो. तिलक के आर्कटिक होम इन द
वेदाज़ में।) इससे बहुत पहले ही वेदमंत्रों के अर्थों और व्याख्या-
ओं पर काफी झगड़े और विवाद शुरू हो गए थे। चार्वाक आदि
अनेक मतों का प्रादुर्भाव हो चुका था। अतः ऐसी दशा में यह
स्वाभाविक ही था कि इस संग्रह में भी अधिक विवेक से काम
नहीं लिया जा सका।

बहरहाल कुछ भी हो, इतना साफ़ है कि ऋग्वेद के सब
सूक्त प्राचीन नहीं हैं। ~~अतः~~ हम ने उन में से प्रत्येक के
भाषा, विषय और दूसरे बाधक प्रमाणों के अनुसार ही अर्थ
और उपयोग किया है।

(३) तीसरी कठिनाई इस सम्बंध में जो सामने रही है वह यह है कि हमारा
अधिकांश प्राचीन साहित्य लेखकों ने भ्रम और पक्षपात पूर्ण दृष्टि
से लिखा हुआ है। जिस प्रकार आज के विदेशी साम्राज्य वादी कि
अपने अधीनस्थ देशों को गलत इतिहास और साहित्य प[ढ़ा]
कर उन्हें अपने प्राचीन गौरव और अपनी सभ्यता को भुला[ने]
की चेष्टा करते हैं, उसी प्रकार अनेक देशी और विदेशी धा[र्मिक]
और राजनैतिक साम्राज्य वादियों ने यहां हजारों वर्षों तक [खे]
ले हैं। उन लोगों ने अपने स्वार्थ के लिये प्राचीन इतिहा[स]
को इतना नष्ट भ्रष्ट कर दिया है कि केवल अपने ही साहित्[य]
सहारे किसी बात के वास्तविक रूप का पता लगाना यदि अ[...]
असम्भव नहीं तो दुःसम्भव अवश्य है। उदाहरण के लिये य[दि]
आज बौद्ध एवं जैन साहित्य का सहारा न लिया जाय तो [...]
को यह पता भी न लगे कि लिच्छवि और मौर्य विशुद्ध
क्षत्रिय थे अथवा यहां के गण राज्य कैसे थे? अतः इ[स]
सम्बंध में हम केवल अपने ही प्राचीन ग्रन्थों पर निर्भर
नहीं रहे हैं। हम ने दूसरे धर्मों के ग्रन्थों, इतिहास और नई ऐति-
हासिक खोज से उपलब्ध सामग्री आदि का भी उपयोग किया
है और इन सब के सहारे एवं समर्थन से जो निष्कर्ष निकला
है उसी पर से विशेष ऐतिहासिक घटनाओं के रूप का निर्णय
किया है।

इस प्रकार पाठक देखेंगे कि इस बात के लिये काफी सावधानी
रखी गई है कि जहां [illegible] सत्य इतिहास ही जनता के सामने

X इतना ही क्यों, वास्तविकता तो यह है कि शुरू में एक ~~[illegible]~~ ही ~~वेद~~ था श्रुतियों और गाथाओं का संग्रह था। पीछे विद्वानों ने उस ~~के~~ ~~सारे~~ भाग को विषयानुसार तीन वेद बना डाले। हाँ, अथर्ववेद की सत्ता अलग अवश्य थी, यही कारण है कि तीनों वेदों के मंत्र भी मिले जुले या खिचड़ी के रूप में पाए जाते हैं और आज किसी भी एक सूक्त के लिये यह मानना कठिन है कि उस के सारे के सारे मंत्र अमुक काल के बने हैं। इसी लिये

Rajasthan Press Service

Conducted under the auspices of;—

"THE RAJASTHAN PUBLISHING HOUSE"

The RPS. is organised by the prominent national workers of the Rajputana and Central India States with a view to create public opinion and interest, in and outside India, by supplying impartial and authentic news from a national standpoint about the conditions of the states subjects and their rulers. It is sent to individuals on the payment of a nominal fee of Rs 2-or. 4-sh for postage. It is sent gratis to all public organisations, newspapers, and periodicals (in and outside India) on the understanding that they give publicity to the topics dealt herein, and in exchange send their Journal. The RPS is glad to receive all periodicals, pamphlets and books (with duplicate if possilble) on all political and social subjects for the purpose of reviewing and noticing.

No.

Adress;—

Secretariat

R P S.

AJMER (India)

... है। जैसा कि आजकल ... ...
प्राचीन लोगों की बनाई हुई कविताओं का संग्रह करते हैं ... हैं और उसी दृष्टि से उन में से जितना इतिहास खोज निकाल सके हैं, निकालने की चेष्टा की है।

किंतु इस में एक बड़ी कठिनाई थी। अर्थात बहुत से ग्रंथों और स्वयं वेदों का किसी एक ही काल के मान लेना असम्भव था। हालांकि अधिकतर लोग अभी तक ऐसा ही करते आए हैं। परन्तु और खोज का निर्णय इस के विरुद्ध है। उदाहरण के लिये वेदों में ऋग्वेद सब से प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है और उस के मंत्रों एवं सूक्तों का काल कोई 30000 और कोई 12000 वर्ष पूर्व तक का विद्वान मानते हैं। और चूंकि ऋग्वेद में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था से ले कर स्वाराज्य और साम्राज्य स्थापन तथा दूसरों का विधर्मियों एवं अनार्यों को मार भगाने तथा कैद कर लेने आदि तक का उल्लेख है, अत: स्वार्थी और श्रद्धालु लोग इन सब बातों को अनादि सिद्ध करते और बताते हैं। अन्ध श्रद्धालु जनसाधारण भी इन बातों पर विश्वास कर लेते हैं। पर वे इस बात को भूल जाते हैं कि वेदों का संग्रह (ऋग्वेद का भी) महाभारत से कुछ ही काल पूर्व हुआ है। (श्री. सी. वी. वैद्य कृत महाभारत मीमांसा) प्रमाण लीजिये। ऋग्वेद के 10 वें मंडल में देवापि का बनाया हुआ सूक्त है। अब यह देवापि कौन सा है? इस के बारे में ऋग्वेद के ही बृहद्देवत ग्रन्थ में लिखा है कि – "आर्ष्टि-षेण देवापि और कौरव्य शान्तनु दोनों भाई थे।" इन्हीं कौरव्य शान्तनु के पुत्र भीष्म और भीष्म के भतीजे धृतराष्ट्र एवं पांडु थे।

X ~~इस के अतिरिक्त~~ ऋग्वेद में "सोमका: साहदेव्य:" का उल्लेख है। इस के सम्बंध में ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि "सहदेव पुत्र सोमक ने एक राजसूय यज्ञ किया था," और हरिवंश में लिखा है कि – "यह सोमक द्रुपद का 5 वां पूर्वज था।" (ऐतरेय ब्राह्मण अध्याय 32) महाभारत में भी द्रुपद और पांचालों को बार २ "सोमका:" कह कर सम्बोधन किया गया है। अत: इन सब बातों से स्पष्ट है कि ऋग्वेद में महाभारत से ... 5000 वर्ष पूर्व तक के लोगों की रचनाएं शामिल हैं। कुछ मंत्र उस में संग्रह के बाद भी ... सभी सूक्त एक ही समय के बने हुए नहीं हैं। विषय और अपने दृष्टिबिन्दु के अनुसार जिन २ सूक्तों और मंत्रों को संग्रहकर्ताओं ने जहां ग्रथित करना उचित समझा वहां ... कर दिया है। Ψ साथ ही यह भी बात ध्यान में रखने योग्य ...

x को मार डालो। (५) पशुओं के साथ व्यभिचार करने वालों को
प्राणदंड होगा। (६) किसी विधवा या अनाथ को न सताओ। (७) यदि
किसी ग़रीब को कर्ज दे तो उससे व्याज मत लो (८) खेत से आया पहला
धान्य, पशुओं से और मनुष्यों से हुए पहले बच्चे ईश्वर को बाली
दिये जांयगे। (९) ईश्वर के सिवाय और देवताओं को बाली देने वाले
नष्ट कर दिये जांयगे। (१०) कोई बुरा काम करने को किसी दल में
मत मिलो। (११) किसी से इनाम या घूंस मत लो (१२) अगर तुम
कोई गुलाम खरीदो तो वह छः वर्ष बाद गुलामी से मुक्त कर
दिया जाय। यदि तुमने उसकी शादी की हो तो उसके स्त्री बच्चे
तुम्हारी सम्पत्ति होंगे। (१३) हत्या का दंड हत्या ही है। (१४) माता
पिता को मारने वाले का वध करदो। (१५) गुलाम को पीटने से
अगर वह मरेगा नहीं, तो पीटने वाले को कोई दण्ड नहीं दिया
जायगा। (१६) अगर कोई किसी का खेत या बगीचा उजाड़ देगा,
तो उसका अच्छे से अच्छा खेत या बगीचा हर्जाने में मुद्दई
को दिला दिया जायगा। (१७) अगर किसी का बैल किसी पुरुष
स्त्री को मार डाले, तो उस बैल को पत्थरों से मार डाला जाय और
उसका मांस कोई न खाय (१८) अगर बैल किसी दूसरे के बैल
को मार डाले तो उस बैल को बेच कर आधी कीमत हरजाने
के तौर पर दे लाई जायगी। (१९) आदमी को चुरा कर बेचने
~~प्राणदण्ड दो~~। वाले को प्राणदण्ड दो।

को मार डालो। (५) पशुओं के साथ व्यभिचार करने वाले को प्राणदंड होगा।
(६) किसी विधवा या अनाथ को न सताओ। (७) यदि किसी गरीब को
कर्ज़ दो तो उससे ब्याज मत लो। (८) खेत से आया पहला धान्य, पशुओं
से और मनुष्यों से हुए पहले बच्चे ईश्वर को बलि दिये जायंगे। (९)
ईश्वर के सिवाय और देवताओं को बलि देने वाले नष्ट कर दिये जायंगे।
(१०) कोई बुरा काम करने को किसी दल में मत मिलो। (११) किसी से इनाम
या घूंस मत लो। (१२) अगर तुम कोई गुलाम खरीदो तो वह छः वर्ष बाद
गुलामी से मुक्त कर दिया जाय। यदि तुम ने उस की शादी की है तो उस के
स्त्री बच्चे तुम्हारी सम्पत्ति होंगे। (१३) हत्या का दण्ड हत्या ही है। (१४)
माता पिता को मारने वाले का वध कर दो। (१५) गुलाम को पीटने से अगर
वह मरेगा नहीं, तो पीटने वाले को कोई दण्ड नहीं दिया जायगा। (१६)
अगर कोई किसी का खेत या बगीचा उजाड़ देगा, तो उस का अच्छे से
अच्छा खेत या बगीचा हर्जाने में मुद्दई को दिला दिया जायगा। (१७)
अगर किसी का बैल किसी पुरुष स्त्री को मार डाले, तो उस बैल को पत्थरों से
मार डाला जाय और उस का मांस कोई न खाय। (१८) अगर बैल किसी दूसरे
के बैल को मार डाले तो उस बैल को बेच कर आधी क़ीमत हर्जाने के
तौर पर दिलाई जायगी। (१९) आदमी को चुरा कर बेचने वाले को
प्राणदण्ड दो।

समाज की प्रारम्भिक अवस्था

जैसा कि हम अध्ययन कर चुके हैं, पहले कुछ दूसरे प्राचीन समूहों
विकास क्रम का विवरण यहां पाठकों को भेंट किया जाता है। सब

जैन धर्म के अनुसार

"जैन आदि पुराण" बताता है कि:—

• उत्सर्पिणी काल के प्रथम चक्र अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में लोग अन्नोपार्जन आदि कुछ न जानते थे। मद्यांग, वस्त्रांग, आदि [illegible] के पांच कल्प वृक्ष थे। इन्हीं से उन्हें जीवन के लिये आवश्यक सामग्री मिलती थी। कोई विवाह पद्धति निश्चित न थी। सन्तानें आम तौर पर जोड़ली - अर्थात् एक ही बार में एक पुत्र और एक पुत्री पैदा होते थे और इन्हीं भाई बहिनों का आपस में विवाह हो जाता था। अथवा वे युवा होने पर पति - पत्नी की तरह रहने लग जाते थे।

इस के बाद पहला कुलकर प्रतिश्रुत पैदा हुआ। इस पहले पहल चन्द्रमा और सूर्य का ज्ञान हुआ और इस ने यह लोगों को सिखाया।

दूसरा कुलकर सन्मति हुआ - इस ने भी लोगों को अनेक बातें सिखाईं विशेषतः नक्षत्रों का ज्ञान कराया।

तीसरा कुलकर क्षेमंकर हुआ - इस ने लोगों को हिंसक पशुओं से रक्षा करना सिखाया। शस्त्रास्त्र बनाना चलाना बताया।

चौथा कुलकर क्षेमंधर - इस ने दूसरों की स्मृति रक्षा और ~~[illegible]~~ ~~के [illegible] की नींव डाली~~ की नींव डाली।

पांचवां सीमंकर - इस ने वस्त्र बनाना, पहनना और वनपुष्प के आभूषण बनाना पहनना सिखाया।

छठा सीमंधर - इस ने बेलों और वृक्षों के सम्बंध में ज्ञान दिया

सातवां विमल वाहन - इस ने पशुओं पर सवारी, उन्हें पालने और गाड़ी आदि बनाने का आविष्कार किया।

चक्षुष्मान - इस ने धात्री विद्या - बच्चों के जनन, पालन पोषणादि सम्बंधी आविष्कार किये। पहले आम तौर पर बालक के पैदा होने पर माता मर जाती थी (पिता भी मर जाता था) पीछे ऐसा होना बन्द हो गया।

इसी प्रकार यशस्वान, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, मरुदेव, प्रसेनजित व नाभि छः कुलकर हुए जिन्होंने नौका बनाने, पुल बांधने, जल क्रीड़ा (तैरना) वन क्रीड़ा (शिकार) गिरि क्रीड़ा (हाथी (हाथी घोड़ों आदि को पकड़ कर सवारी के योग्य बनाना आदि से लगा कर कृषि करने तक के कामों का आविष्कार किया और जन साधारण को सिखाया। साथ ही समाज की शासन व्यवस्था भी बनाई। (आदि पुराण सातवां सर्ग तक)

ओल्ड टेस्टामेंट के अनुसार

प्रारम्भ में मनुष्य खेती आदि [illegible] जानते थे। शीत से रक्षा के लिये वृक्षों के [illegible] और अग्नि उन को [illegible]